



कोल्हापूर
NAAC Reaccredited 'A'
with CGPA -3.24 (in and cycle)

'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार'
- शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साठुकर

ISSN : 2281-8848

VIVEK RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

A Special Issue - III

विशेषांक भाग-III

हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य

January , 2026

अनुक्रम

Sl. No.	Title of Article	Author Name	Page No.
1	खेदिल सहचरिता: हिंदी गीतों में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण	डॉ. राजेश कुमार शर्मा	1-7
2	गुलजार के गीतों में आम आदमी	प्रो. डॉ. नाजिम इयाक़ शख़	8-12
3	आरिफ़ महताब कृत 'तूफ़ानों में जलते विये' गज़ल संग्रह में भाव और विचारों का निरूपण	डॉ. गीता दोहड़मणी	13-16
4	'तरक़श' के आइने में जावेद अख़्तर	डॉ. अनंत केदार	17-24
5	ज्ञानप्रकाश विवेक की गज़लों में आर्थिक परिदृश्य	प्रो. डॉ. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी	25-27
6	समकालीन हिंदी गज़लों में पर्यावरणीय विमर्श: प्रकृति, प्रदूषण और मानव सरोकार	प्रा. सुधाकर कल्लाप्पा इंदी	28-31
7	भारतीय सिनेमा की समीक्षा भी एक साहित्यिक सृजन है...	प्रोफ़ेसर (डॉ.) सुरेश कानडे	32-34
8	राजस्थानी लोक-गीतों में जन-जीवन की सांस्कृतिक प्रथा-परंपराएँ	डॉ. सुधा जांगिड	35-40
9	कुँआर बेचैन की हिंदी गज़लों में प्रेम और विरह भाव	डॉ. सागर रघुनाथ कांबळे	41-43
10	हिंदी फिल्मी गीत: एक विवेचन	प्रो. डॉ. आबासाहेब हरिभाऊ राठोड इण्डे शीतल कचरू	44-48
11	हिंदी गज़लों में अभिव्यक्त सामाजिक संघर्ष	प्रा. डॉ. दीपक विनायकराव पवार	49-52
12	राकेश कुमार सिंह के 'पठार का कोहरा' उपन्यास में आदिवासी लोकगीत	स्वयंपूर्णा विजय गायकवाड	53-56
13	परंपरा से प्रयोग तक: हिंदी फिल्मी गीत	सारिका मूंदड़ा	57-60
14	"दुष्यंत कुमार की गज़ल में सामाजिक और राजनीतिक चेतना" (दुष्यंत कुमार कृत "साये में धूप" के विशेष संदर्भ में)	पूनम प्रवीण पाटील,	61-64
15	दुष्यंत कुमार, फैज अहमद फैज और साहिर लुधियानवी के हिंदी गीत और गज़ल में प्रतिरोधी स्वर: एक सामाजिक विश्लेषण	सिनगरवार पांडुरंग गिरजप्पा	65-67
16	लोकगीत साहित्य व संस्कृति	डॉ. अंजली महेश उबाळे	68-70
17	भोजपुरी और मैथिली के लोकगीतों में नारी चेतना	डॉ. आयेशाबेगम अब्दुलबारी रायनी	71-74
18	'राष्ट्रकवि' प्रदीप के गीत	श्रीमती प्रतिभा दत्तात्रय अडगटला-मोहिते	75-78
19	हिंदी गज़लों में स्त्री विमर्श	सोनाली रावसाहेब घालमे	79-84

लोकगीत साहित्य व संस्कृति

डॉ. अंजली महेश उवाळे

दत्ताजीराव कवम आर्ट्स, सायन्स अँड कॉमर्स,
कॉलेज इचलकरंजी, सहाय्यक प्राध्यापिका,
मो.नं. 9561363346

anjaliubale13@gmail.com

सारांश :-

लोकगीत, साहित्य और संस्कृति एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, जिन्हें हम किसी भी समाज की आत्मा को अभिव्यक्त करनेवाले प्रमुख माध्यम के रूप में देखते हैं। लोकगीत ग्रामीण समाज जीवन, वहाँ की संस्कृति की पहचान करा देते हैं। यह गीत विशिष्ट अवसर तथा त्योहारों के समय की मौखिक परंपरा है, जो एक-दूसरे तक हस्तांतरित की जाती है। इन गीतों में लोगों की आस्था, भावना, अनुभव एवं परंपरा आदि सहज रूप से अभिव्यक्त होते हैं। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि, लोकगीत जनसामान्य के जीवन से उपजे होते हैं। किसी भी समाज की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग लोकगीत है। जिनका यथार्थ चित्रण साहित्य में कर साहित्यकार इन लोकभावनाओं आस्थाओं एवं विश्वासों को साहित्य के माध्यम से सुरक्षित कर उन्हें स्थायित्व प्रदान करता है। जब की संस्कृति समाज के जीवनमूल्य और सामूहिक चेतना का आईना है। किंतु आज के इस आधुनिक युग में ग्रामजीवन की पहचान करा देने वाले लोकगीतों की परंपरा नष्ट होती जा रही है। जिन्हें बचाने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है। इसका यथार्थ चित्रण हमें उपन्यासों में मिलता है।

बीज शब्द :- मौखिक, परंपरा, आस्था, भावना, स्थायित्व, जीवनमूल्य, सामूहिक चेतना, ग्राम जीवन, संघर्ष।

प्रस्तावना :-

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। क्योंकि उसमें समाज में घटित हर घटना एवं प्रसंग आदि का यथार्थ चित्रण किया जाता है। लोकगीत भारतीय ग्राम जीवन की आत्मा का यथार्थ प्रतिबिंब होते हैं। लोकगीतों की विशेषता ये है कि, ये लोगों द्वारा बनाए गए, लोक कंठ से लोक कंठ तक, एक पिढ़ी से दूसरी पिढ़ी तक हस्तांतरित किए जाते हैं। साथ ही इसमें किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्कि पूरे समाज जीवन की अनुभूति को शब्दबद्ध किया जाता है। समस्त समाज जीवन के सुख दुःख रितीरिवाज, परंपराएँ, मान्यताएँ सामूहिक चेतनाएँ तथा जीवन संघर्ष आदि को अभिव्यक्त किया जाता है। यही वह कारण है कि लोकगीत साहित्य के जनसंस्कृतिक धरोवर का अमूल्य अंग माने जाते हैं। लोकगीतों का लोकसंस्कृति के साथ गहरा नाता है। लोक संस्कृति अगर माँ है तो लोकगीत उसकी संतान। ग्रामीण समाज जीवन में घटित होने वाली अनेक घटनाएँ जैसे तिज-त्योहार, जन्म, विवाह, संस्कार, ऋतु परिवर्तन, देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना एवं खेती से जुड़े कर्म आदि कई अवसरों पर ग्रामीणों द्वारा मिल जुलकर लोकगीत गाए जाते हैं। इसका कारण यह है कि, ग्रामीण समाज इनके माध्यम से अपने संस्कार मान्यताएँ एवं परंपराएँ सुरक्षित रखना चाहता है। सीधी, सरल, सहज भावनाप्रधान भाषा में गाए जाने वाले लोकगीत हृदय को छू जाते हैं। किंतु आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण लोकगीतों की परंपरा नष्ट सी होती जा रही है। इसका वास्तविक चित्रण हमें भारतवंशी, मॉरिशस निवासी अभिमन्यु अनंत के उपन्यासों में मिलता है।

शोध आलेख का विश्लेषण :-

अभिमन्यु अनंत जी के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति के अंतर्गत आनेवाली यथासंभव सभी बातों का यथार्थ लेखा-जोखा प्रस्तुत होता है। जिसमें तीज-त्योहार, उत्सव-पर्व, खेल-कूद, खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन, आदतें, मान्यताएँ, रिती-रिवाज, प्रथा-परंपराएँ, शकुन-अपशकुन आदि बातों को प्रामाणिकता से अभिव्यक्त किया है। इन पात्रों को देखने के पश्चात भारतीय ग्रामीण समाज जीवन ही हमारे सामने प्रकट होता है।

गुलामों की भाँति दुःखभरा जीवन जीनेवाले भारतीय मजदूरों ने जहाँ पर अपनी भाषा-धर्म-संस्कृति की रक्षा के लिए जान की चिंता नहीं की। लालच एवं दबावों के बाद भी ईसाईकरण की प्रक्रिया से अपने-आपको बचाया। हिंदी भाषा को सम्मान दिया तथा संस्कृति को बचाए रखा। जिसका चित्रण उपन्यासों में मिलता है, किंतु वर्तमान समय में संस्कृति के हो रहे पतन को भी लेखक समाजोन्मुख लाता है। शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान एवं औद्योगिक प्रगति के कारण परिवर्तित हो रहे जीवन को लेखक शब्दबद्ध करता है। साथ ही पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव तथा उसके अंधानुकरण के कारण मॉरिशस स्थित भारतीय लोगों की विसंस्कृतिकरण की

सामाज्य को भी शब्दांकित करता है। आधुनिक सोच, फिजुलवर्ची, केशनपान्त, देखा देखी की प्रगति आदि कई कार्यों में संस्कृति की हो रही हानी को लेखक उपन्यासों में दर्शाता है तथा उसके सुधार की मांग करता है।

लोकगीत :- "लोक" और "गीत" इन दो शब्दों के योग से बने 'लोकगीत' शब्द का सामान्य अर्थ लोक में प्रचलीत गीत, लोकनिर्मित गीत अथवा लोक-निर्मित गीत है। सामान्यतः लोकगीतों के रचियेता अज्ञात होते हैं तथा जब किसी व्यक्ति विशेष की अनुपस्थिति में लोकपूर्ण समाज जीवन की अनुभूति होती है। म. गांधी जी का शब्दों में कहा जाए तो, "लोकगीतों में चरती माती है, पहाड़ गाते हैं, खेती गाती है, फसलें गाती हैं, उरसाव, मेले, कलुई और परंपराएं गाती हैं।" लोकगीत प्रामाण्य संस्कृति की पहचान करा देते हैं। यह लोक विशेष अवसर तथा त्योहारों के समय गाए जाते हैं। लोकगीतों में लोगों का धार्मिक भाव रहता है। लोकगीत लोककण्ठ की मौखिक परंपरा है जो एक से दूसरे तक हस्तांतरित की जाती है।

लोकभाषा में गाए जानेवाले लोकगीत मुख्यतः अपनी भाषा, संस्कृति, सुख-दुःख की अनुभूतियाँ एवं भावनाओं का भी प्रतिबिम्बित करते हैं। शेर्मेन्द्र सुमन और मल्लिक के शब्दों में, "लोकगीत जनसाधारण के जीवन के सन्निकट होते हैं और उससे मानवजीवन की वासना, प्रेम, घृणा, लालसा तथा उल्लास-विषाद आदि विषयक उन प्रारंभिक अनुभूतियों का चित्रण होता है।" अर्थात् लोकगीत ही लोकसंस्कृति एवं लोकजीवन के वास्तविक परिचायक होते हैं।

मौरिशस समाज जीवन में भारतीय संस्कृति की पहचान करा देने वाले लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन भोजपुरी लोकगीतों में मुख्यतः "होली, कजरी, आल्हा, ठूमरी आदि प्रसिद्ध हैं, जिनसे लोकजीवन की जानकारी मिलती है। क्रिओली सेगा (लोकगीत) का भी समाज में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है।" यद्यपि कुली-मजदूरों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर लोकगीतों को गाने के लिए भी गौरे-मालिकों की पाबंदियों का सामना करना पड़ा है। उनके भय और आतंक से पीड़ित मजदूरों में चेतना और संघर्ष की लहर दौड़ाने के लिए आगे बढ़ता है 'लाल पसीना' उपन्यास का नायक किसना कुंदन की सहायता से किसन मजदूरों को अपने पर हो रहे अन्याय-अत्याचार का विरोध करने के लिए संगठित करता है। खेतों में काम करनेवाले मजदूर किसन और कुंदन की उपस्थिति में एक स्वर में गा उठते हैं,

"रतवा भयानक बीत गयल भैया,
टूट गयल नींदवा हमारी हो भैया
अगेवा बढ़न को ओरी बढ़न को।

पहाड़ी के नीचे दूर तक फैले उन खेतों में यह पहला अवसर था जब मजदूरों के स्वर स्वच्छंदता के साथ बाहर आकर वातावरण में गुँज सके। पहली बार हवा और लोगों की साँसें भय से मुक्त थीं।" अतः स्पष्ट है विपरीत स्थिति में भी भारतीय मजदूरों ने अपनी लोकगीतों की परंपरा को जीवित रखने का प्रयास किया है।

लोकगीत आंतरिक पीड़ा, दुःख-दर्द एवं वेदना की अभिव्यक्ति का भी माध्यम रहे रहे हैं। अतः जाँते पर जंतसार गाती हुई औरतें अपनी अंतरिक यातनाओं को इन गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास का हरि मजदूरों का हिमायती है अतः वह उनके लिए संघर्षरत दिखाई देता है। दृष्टव्य है- "जब भी उसके यहाँ चक्की चलती और औरतें कजरी गाती तो वह उन गीतों की भीतरी पीड़ा से काँप उठता था। न जाने कब से ये औरतें उनमें घुले दर्द को सहती, देखती, सुनती गाती चली आ रही हैं।" अपने दुःख-दर्दों को लोकगीतों के माध्यम से वाणी देने का प्रयास किया है।

यद्यपि अभाव एवं अत्याचारों के बीच में भी भारतीय मजदूरों ने मौरिशस में लोकगीतों की परंपरा को जीवित रखा है किंतु आजकल हमारी यह परंपरा पीछे छूटती-सी जा रही है। उसकी जगह अभिज्ञ की अभिव्यक्ति करनेवाले क्रिओली सेगा तथा फ़िल्मी गीत ले रहे हैं। 'कुहासे का दायरा' उपन्यास का भगत फ़िल्मी गीतों के जमाने में भी अपनी लोकगीतों की परंपरा को जीवित रखने के लिए संघर्षरत दिखाई देता है। दृष्टव्य है, "आजकल के फ़िल्मी गीतों के कारण उसके अपने गीतों का महत्व चाहे गिर गया था, फिर भी भगत उन गीतों से और कुछ न सही अपने पुराने दिनों को एक बार फिर से जी लिया करता था।"

'मेरा निर्णय' उपन्यास में भी लेखक ने मौरिशस की लुप्त होती जा रही लोकगीतों की परंपरा पर चिंता व्यक्त करती हुई लंदन में रहकर लौटी अमिता को दर्शाया है। परिवर्तन के नाम पर गाँव की गायन होती जा रही मूल्यवान धरोहरों के कारण अमीता को बहुत दुःख होता है।

अतः यह कहना अनुचित न होगा कि मौरिशस में भारतीय संस्कृति की पहचान करा देनेवाले लोकगीतों का प्रचलन है किंतु अब आधुनिक चकाचौंध में ये लोकगीत पीछे छूटते जा रहे हैं। आधुनिक रहन-सहन में गायन से होते जा रहे हैं।

निष्कर्ष :-

अभिमन्यु अनत जी के उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक बातों का अध्ययन करने के पश्चात् समस्त मॉरिशस समाज जिस हमारे आँखों के सामने प्रकट होता है। जिसमें मॉरिशस की अनजान धरती पर अपनी पहचान बनाने के लिए अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बचाने के लिए संघर्षरत भारतीय मजदूरों की व्यथा-कथा प्रस्तुत होती है। सांस्कृतिक संघर्ष के अंतर्गत देश को आजादी मिलने के पूर्व से लेकर अब तक अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाए रखने के लिए भारतीय लोगों द्वारा किए गए संघर्ष का यथार्थ चित्रण मिलता है। आधुनिकीकरण तथा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के परिणाम स्वरूप विसंस्कृतिकरण की समस्या तथा उनके खिलाफ किया जानेवाला संघर्ष लेखक यथार्थता से शब्दबद्ध करता है। आज भी अपनी संस्कृति के प्रति लोगों के मन में जो लगाव है उसे अभिव्यक्त करता है।

अपनी भाषा को बचाने के लिए भारतीय मजदूरों द्वारा किया गया संघर्ष, रहन-सहन आ रहा बदलाव, खान-पान, वेशभूषा तथा केशभूषा द्वारा अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए प्रयत्न, पुराने गलत एवं समाजहित में बाधक रीति-रिवाज प्रथा परंपराओं का विरोध, तीज-त्यौहार, उत्सव पर्व के प्रति आस्था, खेल-कूद एवं मनोरंजन के द्वारा हो रहा शोषण तथा उसका विरोध करनेवाले सचेत पात्रों का भी चित्रण मिलता है। साथ ही भारतीय लोकगीतों की परंपराओं तथा विविध संस्कारों की रक्षा के लिए किए गए संघर्षों को शब्दबद्ध किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

- 1) अभिमन्यु अनत - 'और पसीना बहता रहा' प्रका. वर्ष 1993 पृ. क्र. 303
- 2) विरेन्द्रनाथ द्विवेदी - 'आधुनिक हिंदी कविता में लोक तत्व', विद्या प्रका. कानपुर, प्र.सं. 2004 पृ. क्र. 37
- 3) क्षेमेंद्र सुमन और योगेंद्र कुमार मल्लिक - 'साहित्य - विवेचन' आत्माराम अँड सन्स दिल्ली प्र.सं. 1992 पृ. क्र. 990-91
- 4) श्यामधर तिवारी - 'अभिमन्यु अनत का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' अभिनव प्रका. आगरा, प्र.सं. 1997 पृ. क्र. 229
- 5) अभिमन्यु अनत - 'लाल पसीना' प्रका. वर्ष 1977 पृ. क्र. 118
- 6) अभिमन्यु अनत - 'और पसीना बहता रहा' प्रका. वर्ष 1993 पृ. क्र. 53

आय. विभाग और संस्थान के लिए शिक्षा प्रसार - शिक्षाप्रसार प्रौ. बापूजी साहू

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षा संस्था संचालित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर

(अधिकारपत्र स्वशासी संस्था)

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी विभाग, आय. क्यू. ए. सी. तथा महाराष्ट्र हिंदी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

अहोरात्र हिंदी परिषद का 32 वाँ अधिवेशन एवं हि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

“हिंदी गीत और गान: विविध परिदृश्य”
शुक्रवार तथा शनिवार, दिनांक 9 एवं 10 जनवरी 2026

प्रमाणित

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / सुश्री डॉ. अंजली मदेश उवाळे को परिषद के वार्षिक अधिवेशन एवं हि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रमुख अतिथि/विशेष अतिथि/विषय प्रवर्तक/विशेष उपस्थिति/सहाय्यक/प्रया वाचक विषय: लोकगीत आदिश व संस्कृति /सहभा के रूप में शामिल होने हेतु यह प्रमाणपत्र ससम्मान प्रदान किया जाता है।

प्रधान सचिव, महाराष्ट्र हिंदी परिषद

डॉ. राजान चव्हाण

प्रो. (डॉ.) अनिल काळे

अध्यक्ष, महाराष्ट्र हिंदी परिषद

संयोजक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

डॉ. आरिफ महान

आय. क्यू. ए. सी. समन्वयक

डॉ. शुभा जोशी

प्रचार
प्रो. (डॉ.) संजय थोरात



कोल्हापूर

NAAC Reaccredited 'A'
with CGPA -3.24 (in 3rd cycle)

'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार'
-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साबुंखे

ISSN : 2281-8848

VIVEK RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

A Special Issue - II

विशेषांक भाग- II

हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य

January , 2026



“ज्ञान, विज्ञान और सुसंस्कार के लिए शिक्षा प्रसार” - शिक्षणमहर्षि डॉ. बापूजी साखुंबे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षा संस्था संचलित

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर

(अधिकारप्रदत्त स्वशासी संस्था)



विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी विभाग, आय. क्यू. ए. सी. तथा महाराष्ट्र हिंदी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

२० • महाराष्ट्र हिंदी परिषद का ३२ वाँ अधिवेशन एवं द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी • ७३

“हिंदी गीत और गजल: विविध परिदृश्य”

शुक्रवार तथा शनिवार, दिनांक ९ एवं १० जनवरी २०२६

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / सुश्री प्रा. अर्पिता सुभाजी कांबळे
को परिषद के वार्षिक अधिवेशन एवं द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रमुख अतिथि/विशेष अतिथि/विशेष प्रवर्तक/विशेष उपस्थिति/
सम्राध्यक्ष/प्रपत्र वाचक विषय: हिंदी कित्ती में ठीतु छौंर गजल का महत्व
/ सहभाग के रूप में शामिल होने हेतु यह प्रमाणपत्र ससम्मान प्रदान किया जाता है।

डी. गजानन चव्हाण
प्रधान सचिव, महाराष्ट्र हिंदी परिषद

आ.
प्रो. (डॉ.) अनिल कांबळे
अध्यक्ष, महाराष्ट्र हिंदी परिषद

अमल
डॉ. आरिफ़ महान्त
संयोजक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

शुशी.
डॉ. शुती जोशी
आय. क्यू. ए. सी. समन्वयक

अथर्व
प्रो. (डॉ.) संजय थोरात
प्राचार्य



कोल्हापूर
NAAC Reaccredited 'A'
with CGPA 3.24 (in 3rd cycle)

ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांच्यातील शिक्षणप्रसार
विद्यार्थ्यांशी आणि बापूजी साजुंसे

ISSN : 2281-8848

VIVEK RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

A Special Issue - II I

विशेषांक भाग-III

हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य

January , 2026

20	हिंदी फिल्मों में गीत और ग़ज़ल का महत्व	सतिश बाळु हारपडे	85-88
21	हस्तीगल हस्तीजी के ग़ज़लों में चित्रित सामाजिक परिदृश्य	वैष्णवी संजय शिंदे	89-92
22	हिंदी फिल्मी गीतकार एवं ग़ज़लकार	प्रा. सुषमा बाळाराम खोत	93-97
23	ग़ज़लों में सामाजिक परिदृश्य	प्रा. प्रतिका शांताराम ठुंबरे	98-101
24	आचार्य श्री सत्यनारायण गोयंका के गीतों में जीवन मूल्य	डॉ. अनिल काळे मुकुंदा ठोंबरे	102-106
25	राहत इंदौरी के 'गूँज' ग़ज़ल संग्रह में प्रतिरोधी स्वर	डॉ. प्राजक्ता शिवाजी कुरळे	107-110
26	हिंदी फिल्मों में गीत और ग़ज़ल का महत्व	समद हबीब जमादार	111-113
27	हिंदी फिल्मों में गीत और ग़ज़ल का महत्व	प्रा.अपर्णा संभाजी कांबळे	114-117
28	हिंदी गीत और ग़ज़ल में प्रगतिशील चेतना	मीरा सिन्हा	118-122
29	हिंदी ग़ज़ल में सौंदर्य एवं प्रेम का चित्रण	नम्रता पंडित मोहिते	123-128
30	हिंदी ग़ज़लों में राजनीतिक परिदृश्य	प्रा. हसीना मालदार	129-131
31	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में चित्रित आदिवासी लोकगीतों का अध्ययन	प्रा. रविदास एस पाडवी	132-134
32	हिंदी साहित्य के ग़ज़ल विधा में चित्रित नारी	नामदेव ज्ञानदेव शितोळे	135-138
33	हिंदी ग़ज़ल में सामाजिक परिदृश्य	प्रा. डॉ. प्रकाश महादेव निकम	139-143
34	हिंदी गीत और ग़ज़ल में प्रगतिशील चेतना	प्रा. डॉ. संजय नारायण पाटील	144-152
35	समकालीन हिंदी ग़ज़लों में चित्रित राजनीतिक चुनौतियाँ	सुश्री. श्रीदेवी बबन वाघमारे	153-156

प्रधान सचिव, महाराष्ट्र हिंदी परिषद

डॉ. गजानन चव्हाण

[Signature]

अध्यक्ष, महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रो. (डॉ.) अनिल काळे

[Signature]

संयोजक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

डॉ. आरिफ महंत

[Signature]

आय. क्यू. ए. सी. समन्वयक

डॉ. शुभा जोशी

[Signature]

पाचार

प्रो. (डॉ.) संजय शिरान

[Signature]

/सहभाग के रूप में शामिल होने हेतु यह प्रमाणपत्र ससम्मान प्रदान किया जाता है।

सहाय्यक/प्रपत्र वाचक विषय: हिंदी साहित्य में नवगति का विकास और प्रवृत्तियाँ

को परिषद के वार्षिक अधिवेशन एवं हि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रमुख अतिथि/विशेष अतिथि/विषय प्रवर्तक/विशेष उपस्थिति/

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / सुश्री किशोरी अर्पिता शर्मा (शोभा)

प्रमाणपत्र

शुक्रवार तथा शनिवार, दिनांक 9 एवं 10 जनवरी 2026

“हिंदी गीत और गंजन: विविध परिदृश्य”

• महाराष्ट्र हिंदी परिषद का 32 वाँ अधिवेशन एवं हि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी •

विवेक हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी विभाग, आय. क्यू. ए. सी. तथा महाराष्ट्र हिंदी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

(अधिकारपद स्वशासी संस्था)

विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षा संस्था संचालित

“आन, विज्ञान और सुसंस्कार के लिए शिक्षा प्रसार” - शिक्षणमार्गदर्शिका डॉ. बापूजी साठुखे



ISSN- 2230-9578

Impact factor: 7.896

Web: <https://jrdrv.org> Email: jrdrv.org@gmail.com

Journal of Research and Development

Established in 2015, it is a Double-Blind Peer-Reviewed Journal



Certificate of Publication

This is to certify that

किशोरी सुरेश टोणपे

एम. ए. बी. एड, सेट, पी. एचडी (कार्यरत) सहायक प्राध्यापक
दत्ताजीराव कदम आर्ट्स, सायन्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज इचलकरंजी

has successfully published a research paper titled

दलित साहित्य और संविधान: संविधान, अधिकार और अस्तित्व

Volume 17, Issue 9 (IV) | ISSN: 2230-9578

Manuscript ID : JRD -2025-170918

DOI Link : <https://doi.org/10.5281/zenodo.17710076>

The paper was peer-reviewed and accepted for publication on the basis of its academic merit, originality, and relevance to the field.

We congratulate the author(s) on this scholarly contribution

Date of Publication:

October, 2025

Page No(s): 97-99

Chief Editor

Dr. Ramesh V. Bhole

**Journal of Research
and Development**

Web: <https://resd.in> Email: jrdrv.org@gmail.com

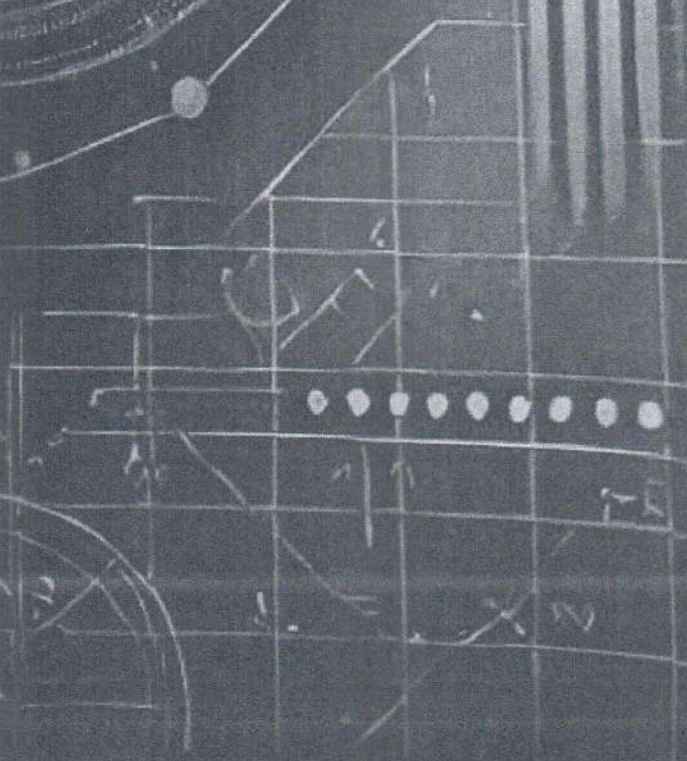
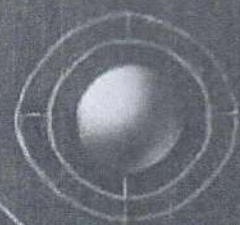
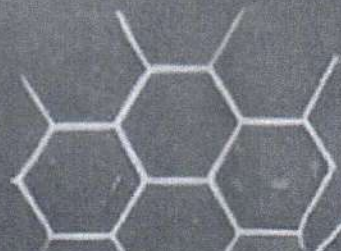
Web: <https://resd.in> Email: jrdrv.org@gmail.com ISSN- 2230-9578

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level

Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access Journal

ISSN: 2230-9578 September - 2025 Volume-17 Issue-9(IV)



Mob: +91-9552416001 Website: <https://jrdryb.org> Chief Editor: Prof. Ramesh V. Bhole



BLDE Association's

New Arts College, Tikota

Dist : VJAYAPUR, KARNATAKA

(Affiliated to Rani Channamma University, Belagavi)



(Accredited with 'B+' Grade with CGPA 2.71 by NAAC at 4th Cycle)

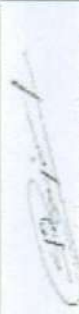
IQAC AND DEPARTMENT OF HINDI

One day National Level Online Conference on

“हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान”

Certificate of Participation

This is certify that *Aparna Sambhaji Kamble* of *Dallajirao Kadam Art's Science & Commerce College 'Ichalkarnji'* has successfully participated in a National Level Online Conference on “हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान” organised by Department of Hindi in association with Internal Quality Assurance Cell (IQAC) on 12-05-2026.


Prof. Sanjaya Rathod
Organizing Secretary


Prof. B.S. Belagali
IQAC Co-ordinator


Prof. P.S. Tolandur
Principal

Made for free with Certify'em



BLDE Association's

New Arts College, Tikota

Dist : VIJAYAPUR, KARNATAKA

(Affiliated to Rani Channamma University, Belagavi)



(Accredited with 'B+' Grade with CGPA 2.71 by NAAC at 4th Cycle)

IQAC AND DEPARTMENT OF HINDI

One day National Level Online Conference on

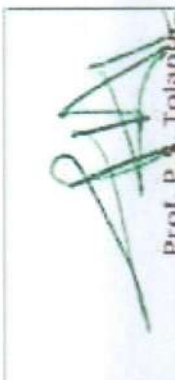
“हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान”

Certificate of Participation

This is certify that *Aparna Sambhaji Kamble* of *Dattajirao Kadam Ar's Science & Commerce College Ichalkarnji* has successfully participated in a National Level Online Conference on “हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान” organised by Department of Hindi in association with Internal Quality Assurance Cell (IQAC) on 12-05-2026.


Prof. Sanjaya Rathod
Organizing Secretary


Prof. B.S. Belagali
IQAC Co-ordinator


Prof. P.S. Tolandur
Principal

Made for free with Certify'em



सत्यमेव जयते

Government of India



MALAVIYA MISSION
TEACHER
TRAINING PROGRAMME



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

University Grants Commission

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

NEP 2020 ORIENTATION & SENSITIZATION PROGRAMME

This is to certify that, **Dr. Anjali Mahesh Ubale, Assistant professor, Dattjirao Kadam Arts, Science & Commerce College Ichalkaranji** has completed the NEP 2020 Orientation & Sensitization Programme under Malaviya Mission Teacher Training Programme (MM-TTP) of University Grants Commission (UGC) Organized by UGC-Malaviya Mission Teacher Training Centre, Kumaun University, Nainital (Uttarakhand) from **05 January to 13 January, 2026**.

Director/Coordinator (MM-TTC)



सत्यमेव जयते
Government of India



MALAVIYA MISSION
TEACHER
TRAINING PROGRAMME



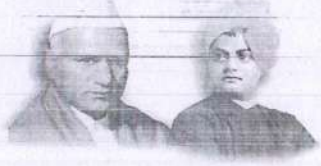
ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
University Grants Commission

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

NEP 2020 ORIENTATION & SENSITIZATION PROGRAMME

This is to certify that, **Mr. NILESH VASANTRAO JADHAV**, Head and Assistant Professor, **Dattajirao Kadam [REDACTED] Art's, Science and Commerce College, Ichalkaranji** has completed the NEP 2020 Orientation & Sensitization Programme under Malaviya Mission Teacher Training Programme (MM-TTP) of University Grants Commission (UGC) Organized by UGC-Malaviya Mission Teacher Training Centre, Kumaun University, Nainital (Uttarakhand) from **05 January to 13 January, 2026**.

Director/Coordinator (MM-TTC)



"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचलित

आर्ट्स, कॉमर्स अँड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२५

॥ प्रमाणपत्र ॥



प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ. गिलेश वसंत जाधव

महाविद्यालय दत्ताजीराव कदम आर्ट्स, सायन्स अँड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में बीजभाषक/सत्राध्यक्ष/विषय-विशेषज्ञ/विषय प्रवर्तक/प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. गणेश गभाले
सह-संयोजक

प्रा. शक्ति आतार
संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) साताप्पा सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल

कैप्टन डॉ. महेश नायकवाड
प्र. प्रधानाचार्य



"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे
श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचालित

आर्ट्स, कॉमर्स अँड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२५

॥ प्रमाणपत्र ॥



प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ.

निलेश वसंत जाधव

महाविद्यालय

दत्तात्रेय कदम आर्ट्स, सायन्स अँड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में बीजभाषक/सत्राध्यक्ष/विषय-विशेषज्ञ/विषय प्रवर्तक/प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. मणेश गभाळे
सह-संयोजक

प्रा. शोक्ति आतार
संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) साताप्पा सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल

कैप्टन डॉ. महेश नायकवाड
प्र. प्रधानाचार्य



"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचालित

आर्ट्स, कॉमर्स अँड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

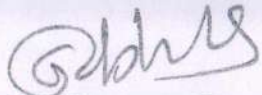
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला
दि. २३ अगस्त, २०२१

॥ प्रमाणपत्र ॥

प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ. अपर्णा संभाजी कांबळे

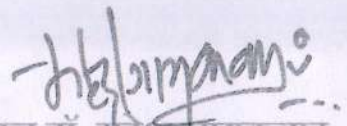
महाविद्यालय दत्तात्रिवा कदम आर्ट्स, सायन्स अँड कॉमर्स कॉलेज, स्वल्करंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में बीजभाषक/सत्राध्यक्ष/विषय-विशेषज्ञ/विषय प्रवर्तक/प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।


डॉ. गणेश गभाले
सह-संयोजक


प्रा. शक्ति आतार
संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष


प्रो. (डॉ.) साताप्पा सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल


कैप्टन डॉ. महेश कुलकर्णी
प्र. प्रधानाचार्य



“ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार” - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे
श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचालित

आर्ट्स, कॉमर्स अण्ड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२१

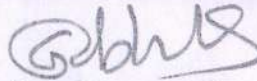
॥ प्रमाणपत्र ॥

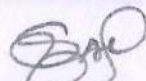


प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ. किशोरी सुरेश टोठारे

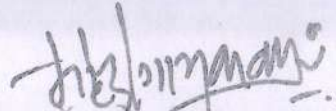
महाविद्यालय एल.जी.ए. कदम आर्ट्स, सायन्स अण्ड कॉमर्स कॉलेज, रचलकरंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में बीजभाषक/सत्राध्यक्ष/विषय-विशेषज्ञ/विषय प्रवर्तक/प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।


डॉ. गणेश गभाले
सह-संयोजक


प्रा. शिकर आतार
संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष


प्रो. (डॉ.) साताप्पा सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल


कैप्टन डॉ. महेश चवहाड
प्र. प्रधानाचार्य



Deccan Education Society, Pune



Willingdon College, Sangli

(An Autonomous College Affiliated Shivaji University, Kolhapur)

CERTIFICATE

This is to certify that Prof. / Dr. /Shri /Smt. **नीलेश वसंतराव जाधव** of **शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर** has participated / presented Research Paper entitled **नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में चित्रित नारी** in the International Conference “ **Anvaya - Transformative Frontiers of Emerging Trends in Humanities, Science and Technology (TFETHST)** ” organized by Willingdon College, Sangli on 25th March 2026 .

Dr. Shashikant Shrangare
Co-Convener (TFETHST-2025-26)

Dr. Raju Kagne

Dr. Samir Terdalkar

Dr. Ravindra Kulkarni

Prof. Dr. Satappa Sawant
Officiating Principal & Convener
(TFETHST-2025-26)



Deccan Education Society, Pune



Willingdon College, Sangli

(An Autonomous College Affiliated Shivaji University, Kolhapur)

CERTIFICATE

This is to certify that *श्री. निलेश वसंतराव जाधव* of *अनुसंधाता, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर* has participated and presented a Research Paper entitled *नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में नारी विमर्श* in the International Conference “**Anvaya-Transformative Frontiers of Emerging Trends in Humanities, Science and Technology (TFETHST)**” organized by Willingdon College, Sangli on 25th March 2026.

Dr. Shashikant Shrangare
Co-Convener (TFETHST- 2025-26)

Dr. Raju Kagne

Dr. Samir Terdalkar

Dr. Ravindra Kulkarni

Prof. Dr. Satappa Sawant
Officiating Principal & Convener
(TFETHST-2025-26)



BLDE Association's
New Arts College, Tikota

Dist : VIJAYAPUR, KARNATAKA
(Affiliated to Rani Channamma University, Belagavi)



(Accredited with 'B+' Grade with CGPA 2.71 by NAAC at 4th Cycle)

IQAC AND DEPARTMENT OF HINDI

One day National Level Online Conference on

“हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान”

Certificate of Participation

This is certify that *Aparna Sambhaji Kamble* of *Dattajirao Kadam Art's Science & Commerce College Ichalkarnji* has successfully participated in a National Level Online Conference on “हिंदी कहानी साहित्य विरासत और वर्तमान” organised by Department of Hindi in association with Internal Quality Assurance Cell (IQAC) on 12-05-2026.


Prof. Sanjaya Rathod
Organizing Secretary


Prof. B.S. Belagali
IQAC Co-ordinator


Prof. P.S. Tolantur
Principal



सत्यमेव जयते

Government of India



**MALAVIYA MISSION
TEACHER
TRAINING PROGRAMME**



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

University Grants Commission

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

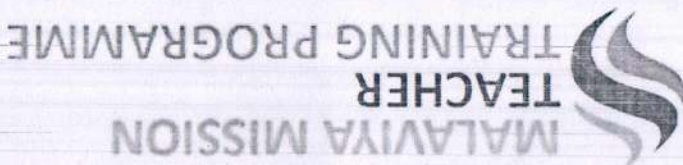
NEP 2020 ORIENTATION & SENSITIZATION PROGRAMME

This is to certify that, **Dr. Anjali Mahesh Ubale**, Assistant professor, **Dattjirao Kadam Arts, Science & Commerce College Ichalkaranji** has completed the NEP 2020 Orientation & Sensitization Programme under Malaviya Mission Teacher Training Programme (MM-TTP) of University Grants Commission (UGC) Organized by UGC-Malaviya Mission Teacher Training Centre, Kumaun University, Nainital (Uttarakhand) from **05 January to 13 January, 2026**.

Director/Coordinator (MM-TTC)



Government of India



CERTIFICATE OF PARTICIPATION

NEP 2020 ORIENTATION & SENSITIZATION PROGRAMME

This is to certify that, Mr. NILESH VASANTRAO JADHAV, Head and Assistant Professor, Dattajirao Kadam [REDACTED] Art's, Science and Commerce College, Ichalkaranji has completed the NEP 2020 Orientation & Sensitization Programme under Malaviya Mission Teacher Training Programme (MM-TTP) of University Grants Commission (UGC) Organized by UGC-Malaviya Mission Teacher Training Centre, Kumaun University, Nainital (Uttarakhand) from 05 January to 13 January, 2026.

[Signature]

Director/Coordinator (MM-TTC)



University Grants Commission



"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यासाठी शिक्षणप्रसार" - शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचालित

आर्ट्स, कॉमर्स अण्ड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२१

॥ प्रमाणपत्र ॥



प्रा./श्री./श्रीमती / डॉ. अपर्णा संभजी कांखे

महाविद्यालय दत्तात्रिवा कपूर आर्ट्स, सायन्स अण्ड कॉमर्स कॉलेज, इचलकरंजी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्रचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में बीजभाषक/सत्राध्यक्ष/विषय-विशेषज्ञ/विषय प्रवर्तक/प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. गणेश गभाले
सह-संयोजक

प्रा. शोभित आतार
संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) साताप्पा सावंत
अध्यक्ष. हिंदी अध्ययन मंडल

कैप्टन डॉ. महेश सायकवाड
प्र. प्रधानाचार्य



"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांचाही शिक्षणप्रसार" - शिक्षणप्रवर्धी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापूर संचालित

आर्ट्स, कॉमर्स अण्ड सायन्स कॉलेज, नागठाणे

हिंदी विभाग एवं

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला

दि. २३ अगस्त, २०२१

॥ प्रमाणपत्र ॥



प्रा. / श्री. / श्रीमती / डॉ. विशेशी सुशे टोणे

महाविद्यालय एन्ट्रिन्सिब कपुम आर्ट्स, सायन्स अण्ड कॉमर्स कॉलेज, नागठाणे

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के बी.ए. भाग २ आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य (Major प्रश्नपत्र क्रं. III और V) के (नई शिक्षा नीति NEP २०२० के अनुसार) पुनर्संचित पाठ्यक्रम पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में बीजभाषक / सत्राध्यक्ष / विषय - विशेषज्ञ / विषय प्रवर्तक / प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है।

डॉ. नानेश नभाळे
सह-संयोजक

प्रा. शांकु आनार
संयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) साताप्पा सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल

कैटन डॉ. मधुसूदन कवड
प्र. प्रधानाचार्य

[illegible]

6. ସମସ୍ତଙ୍କୁ ସ୍ୱାଗତ୍ କରନ୍ତୁ ।

5. दिव्यांग बच्चों का समावेश :

5. दिव्यांग बच्चों का समावेश :

4. निस्तान नारी की समस्या:

4. निम्नलिखित ताली की समझा:

3. कुलच्छी एव कलिकाजी की सामस्याः

3. કલ્પવૃક્ષી પદ કલ્પિકા નામી કવિ રચ્યું.



Deccan Education Society, Pune



Willingdon College, Sangli

(An Autonomous College Affiliated Shivaji University, Kolhapur)

CERTIFICATE

This is to certify that Prof. / Dr. /Shri /Smt. *नीलेश वसंतराव जाधव* of *शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर* has participated / presented Research Paper entitled *नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में चित्रित नारी* in the International Conference “Anvaya - Transformative Frontiers of Emerging Trends in Humanities, Science and Technology (TFETHST)” organized by Willingdon College, Sangli on 25th March 2026 .

Shrangare

Raju Kagne

Samir Terdalkar

Ravindra Kulkarni

Satappa Sawant

Dr. Shashikant Shrangare Dr. Raju Kagne
Co-Convenor (TFETHST-2025-26)

Dr. Samir Terdalkar Dr. Ravindra Kulkarni
Organizing Secretary (TFETHST-2025-26)

Prof. Dr. Satappa Sawant
Officiating Principal & Convener
(TFETHST-2025-26)



1. सेठ राणी, अंतःरूप के दाह की कहानियाँ, हंस पत्रिका, फरवरी, 2004 पृष्ठ क्र. 81
2. बहरी - पृष्ठ सं. 82
3. सुर्खावा, द. सामाजिक अक्षर विज्ञ, उज्जैन, 1987 पृ. सं. 04
4. उदय प्रकाश, 'उत्तरी गांव में', साहित्य प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1988 - किताब की प्रतिका में लिखा है।
5. नरेन्द्र नागदेव, वापसी के नाखून, (भारतीय साहित्यीय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003) पृ. सं. 63
6. नरेन्द्र नागदेव, पड़ खाली नही है (किताबधर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017) पृ. सं. 42
7. नरेन्द्र नागदेव, तमाशाबीन, (नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली, 1987) पृ. सं. 99
8. रीहणी अग्रवाल, हिंदी उपन्यास में कामकाजी महिला, द्वितीय प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 1992, पृ. सं. 130

संदर्भ

नागदेव के साहित्य की विशेषता यह है कि वे नारी को केवल पीछे रहने के रूप में नहीं, बल्कि एक सक्रिय और प्रतिक्रिया करने वाली स्त्री के रूप में प्रस्तुत करते हैं। कई स्थानों पर नारी अपने ऊपर हुए अन्याय के प्रति प्रतियोगी भी करती है, जो उसके आत्मबोध और स्वायत्तता का संकेत है। यह दृष्टिकोण सामकालीन नारी-विमर्श के उस पक्ष को मजबूत करता है, जो नारी को एक संशयित और निष्पक्ष दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार करता है। अंततः कहा जा सकता है कि नरेन्द्र नागदेव ने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से सामकालीन समाज में जी रही नारी के जीवन का सजीव और प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत किया है। उनका साहित्य नारी-विमर्श को न केवल गहराई प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक पृष्ठभूमि की नई परतों को भी उद्घाटित करता है। इस प्रकार, नागदेव का कथा-साहित्य नारी-अस्मिता, सामाजिक संरचना और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

